ष्ट माला, खंड 9, अंक 21

बुधवार, 21 अगस्त, 1985
20 श्रावण, 1907 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद
का
हिन्दी संस्करण

तीसरा सत्र
(आठवीं लोक सभा)

सत्यमेव जयते

(खंड 9 में अंक 21 से 26 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य : चार रुपये

[अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जायेगी। उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा]

विषय-सूची

अष्टम माला, खंड 9, तीसरा सत्र, 1985/1907 (शक)

अंक 21, बुधवार, 21 अगस्त, 1985/20 श्रावण, 1907 (शक)

विषय	पृष्ठ
निधन सम्बन्धी उल्लेख (संत हरचन्द सिंह लोंगोवाल का निधन)	1—9

लोक सभा

बुधवार, 21 अगस्त, 1985/20 श्रावण, 1907 (शक)

लोक सभा 11 बजे समवेत हुई

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

निधन संबंधी उल्लेख

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : प्रधान मन्त्री जी ।

प्रधान मन्त्री (श्री राजीव गांधी) : अध्यक्ष महोदय, कल सन्त हरचन्द सिंह लोंगोवाल की जघन्य हत्या से राष्ट्र की महान क्षति हुई है। यह क्षति इस सभा के प्रत्येक सदस्य और हमारे देश के प्रत्येक नागरिक की क्षति है।

मैं सन्त जी से पहली बार कई वर्ष पूर्व मिला था। मैंने उन्हें एक निष्ठावान और प्रत्यक्षतः ईमानदार व्यक्ति पाया। वह राष्ट्रीय एकता और पंजाब के विकास के लिए समर्पित थे। सन्त जी साम्प्रदायिक सौहार्द और पंजाब में भाईचारे में विश्वास रखते थे। अपनी शहादत से सन्त जी सिखों और पंजाब के उन शहीदों में शामिल हो गए हैं जिन्होंने भारत की एकता, अखण्डता और सुदृढ़ता के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

सरकार से समझौते के ज्ञापन पर हस्ताक्षर करके सन्तजी ने अदम्य साहस और हिम्मत का परिचय दिया। इस समझौते का पंजाब और पंजाब से बाहर भारत में सभी सिखों, हिन्दुओं तथा अन्य धार्मिक समुदायों ने स्वागत किया था। सभी समझदार व्यक्तियों ने इस समझौते की सराहना की थी।

फिर भी कुछ ऐसी शक्तियां हैं जो अपने स्वार्थों के लिए हमारे देश की एकता और अखण्डता के विरुद्ध कार्य कर रही हैं। इन राष्ट्र विरोधी शक्तियों ने इस जघन्य हत्या से यह सिद्ध कर दिया है कि वे केवल राष्ट्र विरोधी ही नहीं अपितु सिखों के भी खिलाफ हैं।

भारत आतंक अथवा आतंकवादियों की गतिविधियों के आगे नहीं झुकेगा। हम पूरी शक्ति के साथ इन ताकतों का मुकाबला करेंगे।

आज हमारे देश के सभी वर्गों को सन्त जी के साम्प्रदायिक सद्भाव, एकता और अखण्डता के सिद्धान्तों पर चलना चाहिए। आइए हम सब भारत में भाईचारे, शान्ति, विश्वास और अखण्डता के लिए एक हो जाएं। सन्त जी की शहादत को यही सच्ची श्रद्धान्जलि होगी।

श्री सी० माधव रेड्डी (आदिलाबाद) : मैं महान सन्त, सन्त लोंगोवाल की हत्या पर तेलुगु देशम पार्टी की ओर से दुःख प्रकट करता हूं।

मैं सभा के नेता के इस मत से सहमत हूं कि उनका जीवन शान्ति और सिख-हिन्दू एकता के लिए समर्पित था। वह एक महान आत्मा थे और एक बहुत बड़े देशभक्त थे और

हमने एक महान हस्ती को खो दिया है। बड़े दुःख की बात है कि जहां हम इस सभा में आतंकवाद के विरुद्ध कानून बना रहे हैं वहाँ दूसरी ओर आतंकवाद के कारण ऐसे महान व्यक्तियों की हत्यायें हो रही हैं।

मैं अत्यन्त दुःख प्रकट करता हूं और मैं अकाली दल को संवेदना भेजता हूं। ईश्वर सन्त लोंगोवाल की आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

श्री अमल दत्त (डायमंड हार्बर) : मैं सन्त हरचन्द लोंगोवाल की हत्या पर अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से गहरा शोक व्यक्त करता हूं। हम आतंकवाद के कार्यों की निन्दा करते हैं जैसा कि हम हमेशा अतीत में करते आए हैं। इस आतंकवाद के कारण ही आज सन्त जी की शहादत हुई है।

सन्त लोंगोवाल ने अपना जीवन एक ग्रंथी के रूप में आरम्भ किया और धार्मिक नेता बन गए। उनके नियन्त्रण से बाहर शक्तियां उन्हें राजनीति में खींच लाईं और वह आपातकाल में, जब अन्य नेता उपलब्ध नहीं थे, राजनीतिक नेता बन गए और उन्होंने नेतृत्व का उतरदायित्व लिया और वह 1980 में अकाली दल के सर्वोच्च नेता बन गए।

एक समय ऐसा था जब पंजाब में 1981 से शुरु हुई घटनाओं के कारण लोगों ने संत जी को ठीक से नहीं समझा। परन्तु पंजाब द्वारा चोट खा लेने के बाद सन्त जी ने समझौते पर हस्ताक्षर करके अनुकरणीय साहस का परिचय दिया। इस समझौते से पंजाब में शान्ति और स्थिरता की आशा बन्धी। परन्तु दुर्भाग्यवश अस्थिरता पैदा करने वाली शक्तियों ने जिनके साथ पहले सख्ती से नहीं निपटा गया था, पंजाब की राजनीति में अपनी जड़ें गहरी जमा ली हैं और अब उन्हें जड़ से उखाड़ना और भारत के उस भाग में शांन्ति स्थापित करना कठिन कार्य दिखाई देता है जिसने पिछले दो से अधिक दशकों से शेष भारत को नेतृत्व प्रदान किया है।

समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद हमारे में से कुछ विपक्षी दलों ने आशंका व्यक्त की थी कि यदि तत्काल चुनाव कराए गए तो अस्थिरता पैदा हो सकती है। हम पुनः आग्रह करते हैं कि वर्तमान परिस्थितियों तथा इस दुःखद घटना को देखते हुए अब आप कृपया पुनः विचार करें···

श्री कमल नाथ (छिंदवाड़ा) : यह निधन सम्बन्धी उल्लेख चल रहा है। महोदय, क्या आप वाद-विवाद की अनुमति दे रहे हैं ?·········

(व्यवधान)

श्री अमलदत्त : मैं किसी विवाद में नहीं पड़ रहा हूं·········

अध्यक्ष महोदय : कृपया ऐसा न करिये।

श्री अमल दत्त : इससे यदि किसी प्रकार का विवाद उत्पन्न हुआ है तो मैं खेद व्यक्त करता हूं। मेरा यह इरादा बिलकुल नहीं था। हमारी राय तो पहले ही समाचार-पत्रों से स्पष्ट हो गई है। अतः यह मुद्दा नहीं है। परन्तु इस दुःखद घटना को देखते हुए मेरे विचार से हमें अपने अन्दर झांकना होगा और देखना होगा कि क्या राष्ट्र इतनी चोट सहने के बाद उस गति से आगे बढ़ सकेगा जिस गति से स्पष्टतया प्रधान मंत्री और दल चाहता है। महोदय, अब मैं श्री लोंगोवाल के शोक सन्तप्त परिवार, पूरे अकाली दल और उनके अनुयायियों के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री पी० कुलनदईवेलू (गोबिचेट्टिपालयम्) : महोदय, आज बड़े दु:ख का दिन है। इस सत्र में यह दूसरी बार है कि मैं एक ऐसे राजनीतिज्ञ और धार्मिक नेता का निधन सम्बन्धी उल्लेख कर रहा हूं जो शांति, भाईचारे और आपसी सद्भावना के प्रति समर्पित थे। महोदय, वस्तुतः इस घृणित कार्य की जोरदार निन्दा की जानी चाहिए। मैं तो यहां तक कहूंगा कि श्री लोंगोवाल ने हमारे माननीय प्रधान मंत्री के सहायता से जो शांति समझौता किया वह पंजाब के इतिहास का मैग्नाकार्टा (महाधिकार-पत्र) है। वास्तव में उन्हें शांति का सर्वोत्कृष्ट पुरस्कार दिया जाना चाहिए। मेरा भारत सरकार को सुझाव है कि कम से कम इस वर्ष जो शांति के लिए श्रेष्ठ पुरस्कार दिया जाए वह श्री लोंगोवाल को दिया जाए।

महोदय, आल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कजगम की ओर से हम शोक संतप्त परिवार के प्रति गहरा दु:ख और संवेदना प्रकट करते हैं।

प्रो. मधु दण्डवते (राजापुर) अध्यक्ष महोदय, भारत की महान परम्परा में एक और व्यक्ति शहीद हुआ। इस देश के लिए यह कोई नया अनुभव नहीं है कि शांति के लिए जूझने वालों को शहादत की वेदी पर बलि देनी पड़ती है। यदि इस देश के महानतम व्यक्ति गांधीजी शान्ति की राह पर चलने के कारण किसी हत्यारे की गोली से नहीं बच सके तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि शांति की राह पर चलने वाले श्री लोंगोवाल को भी वही भारी मूल्य चुकाना पड़ा।

महोदय, श्री लोंगोवाल ने पंजाब समझौते पर हस्ताक्षर करके अत्यधिक उत्साह और साहस दिखाया था क्योंकि वह शांति, साम्प्रदायिक सौहार्दता के प्रति समर्पित थे और वह भारत के संविधान के ढांचे के भीतर ही समस्या का समाधान चाहते थे।

महोदय, इस अवसर पर मैं श्री लोंगोवाल के कार्य का एक संस्मरण सुनाना चाहता हूं ताकि भावी इतिहास इसका साक्षी रहे। प्रधान मन्त्री महोदय को स्मरण होगा कि 29 अप्रैल 1985 को विरोधी दलों के हममें से कुछ सदस्यों ने श्री लोंगोवाल से इस आशा से भेंट की थी कि वार्तालाप फिर से आरम्भ की जा सके और टकराव का रास्ता छोड़ा जा सके। महोदय, उसके तत्काल बाद प्रधान मन्त्री ने विरोधी दलों की एक बैठक बुलायी थी ताकि समस्या का समाधान निकाला जा सके और उन्होंने हमसे पूछा था कि श्री लोंगोवाल जी और अन्य नेताओं के अनुसार पंजाब समस्या के समाधान में क्या अड़चनें आ रही हैं? मैंने उस समय प्रधान मन्त्री महोदय को बताया था—उन्हें याद भी होगा—कि श्री लोंगोवाल जी ने कहा है कि पंजाब समस्या के वार्ता द्वारा समाधान के रास्ते में केवल तीन अड़चनें आ रही हैं और यदि उन्हें दूर किया जाए तो समस्या हल हो जायेगी। उन्होंने कहा था कि ये तीन अड़चनें हैं :—

1. हिंसा के दोषी व्यक्तियों के सिवाय शेष सभी व्यक्तियों को छोड़ा जाना चाहिए।

2. विशेष अदालतों के बजाय उन पर सामान्य न्यायालयों में सामान्य कानूनी प्रक्रिया के अनुसार मुकदमें चलाये जाने चाहिए।

3. सेना से भागे हुए व्यक्तियों के सम्बन्ध में अधिक सहानुभूति पूर्ण रवैया अपनाया जाना चाहिए।

जब मैंने विरोधी दल के सदस्यों की बैठक में प्रधान मन्त्री को ये बातें बतादीं तो उन्होंने कहा कि "क्या वे अपने वचन पर कायम रहेंगे ?" महोदय, आज मैं इस सदन को बताना चाहता हूं कि श्री लोंगोवाल अपनी वचनबद्धता के कारण ही शहीद हुए। वार्तालाप के दौरान प्रधान मन्त्री ने इन तीन बातों को पंजाब समझौते में स्वीकार किया किन्तु उससे भी ज्यादा श्री लोंगोवाल अपने जीवन को खतरे में डालकर अपने वचन पर जो उन्होंने हमें और प्रधान मन्त्री को दिया था अडिग रहे। ऐसा उन्होंने अपने जीवन को खतरे में डालकर किया। जब उन्होंने समझौते पर हस्ताक्षर किये तो कुछ उग्रवादियों ने उनसे कहा था कि उन्होंने अपने मृत्यु के वारंट पर हस्ताक्षर किए हैं। उन लोगों ने उस वारंट को क्रियान्वित कर ही दिया। लेकिन इतिहास में ऐसे कई वारंट क्रियान्वित किये जाते हैं और मृत्यु को प्राप्त करने वाले अमर हो जाते हैं तथा जो उन्हें मारने का प्रयत्न करते हैं उन्हें इतिहास के कूड़ेदान में ही स्थान मिलता है। यही इतिहास का अनुभव है और इतिहास में ऐसा घटता रहेगा।

अतः मैं श्री लोंगोवाल जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उन्होंने अपने वायदे को पूरा किया उन्होंने शांति और सौहार्दता का साथ दिया। वह चाहते थे कि पूरा देश दुःखद घटनाओं पर शोक प्रकट करे। जब लोंगोवाल जी और प्रधान मन्त्री ने इस समझौते पर हस्ताक्षर किये थे तो मैंने कहा था कि उनके बीच हुए समझौते का अर्थ है पंजाब की व्यथा और भारत की चिन्ता का समाप्त होना। पंजाब और भारत दोनों ही समस्या का समाधान चाहते हैं। श्री लोंगोवाल ने ऐसा ही करने का प्रयत्न किया।

महोदय, अन्त में मैं यह अवश्य कहना चाहता हूं कि आपकी जो भी सुरक्षा व्यवस्था हो, जो लोग सार्वजनिक जीवन में और विशेषकर जन आन्दोलन में हैं, यह खतरा तो उनके लिए बना ही रहेगा। यदि कोई हमें मारना ही चाहता है तो कोई भी सुरक्षा गार्ड हमें बचा नहीं सकता। हममें से जो लोग जनता के बीच काम करते हैं, वे जनता के बीच ही मरेंगे। श्री लोंगोवाल भी इसी तरह मरे हैं। अतः मैं रोता नहीं हूं क्योंकि शहीद के लिए कोई नहीं रोता है। शहीदों के लिए केवल गीत गाए जाते हैं। मैं एक बार फिर उस गीत को गाता हूं क्योंकि बायरन के शब्दों में "ही नेवर फेल्स हू डाइज इन ए ग्रेट काज" वह एक महान उद्देश्य के लिए मरे। वह कभी असफल नहीं होंगे। वह राज्य का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

श्री इन्द्रजीत गुप्त (बसिरहाट) : महोदय, आज सदन की बैठक अत्यन्त शोकपूर्ण परिस्थितियों में हो रही है जिसका हम कल इस समय अनुमान नहीं लगा पाते। शायद संसद के इतिहास में इतनी कम अवधि में आतंकवादियों के हाथों मारे जाने वाले इतने प्रमुख व्यक्तियों के निधन पर कभी शोक व्यक्त नहीं करना पड़ा होगा जितना पिछले एक वर्ष के दौरान हमें करना पड़ा है। मुझे आशंका है कि यह अन्तिम अवसर नहीं होगा। महोदय, इतिहास में अनेक देशों में आतंकवाद के अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं। स्वयं भारत में ही स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान ऐसे उदाहरण मिलते हैं। ऐसे लोग थे जो आतंकवादी तरीके अपनाते थे किन्तु उनके कुछ आदर्श थे। हो सकता है जिन तरीकों को उन्होंने अपनाया वे ठीक न रहे हों किन्तु जिन आदर्शों को लेकर वे चले, उनकी सब इज्जत करते हैं। लेकिन इस मामले में हमें समझ नहीं आता कि इन लोगों ने कौन से आदर्शों से प्रेरित होकर एक बूढ़े आदमी को पूजा स्थल गुरुद्वारे में गोली का शिकार बनाया। इसके पीछे सिवाय अत्यन्त घृणित विचारों और उद्देश्यों के और कौन-सी भावना हो सकती है। जो हुआ उसके प्रति मैं अपनी पार्टी की ओर से गहरा शोक और

और संवेदना प्रकट करता हूं क्योंकि काफी लम्बे समय से हम सभी, इस सदन में और बाहर भी, इस बात के लिए प्रयत्नशील रहे हैं कि कम से कम पूजा-स्थलों में हिंसा और हथियारों का प्रयोग करके उनका दुरुपयोग नहीं किया जाना चाहिए किन्तु एक बार फिर सभी आशाएं, कम से कम इस समय तो पूरी तरह से धूमिल हो गई हैं।

महोदय, अब जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं तो संत लोंगोवाल के पिछले अनेक कार्यों और वक्तव्यों को आसानी से समझ सकते हैं हालाँकि तब वे संदिग्ध दिखाई देते थे, उतने स्पष्ट नहीं दिखते थे जितना हम चाहते थे। इसमें संदेह नहीं कि वह जानते थे कि उनका जीवन खतरे में था, वह काफी लम्बे समय से इन आतंकवादियों की 'हिट लिस्ट' में थे। शायद वह यह भी जानते थे, जैसाकि अब मैं भी बड़े दुःख के साथ जानता हूं कि इस प्रकार की बुराई का मुकाबला करने के लिए सुरक्षा व्यवस्था बिलकुल अपर्याप्त थी। पर्याप्त सुरक्षा और संरक्षण के अभाव में यह बात समझ में आ सकती है कि जिन अत्यन्त जटिल और कठिन परिस्थितियों से देश, और स्वयं लोंगोवाल, को गुजरना पड़ा था, उनमें कई बार ऐसा भी हुआ कि वह उतना दृढ़ और असंदिग्ध दृष्टिकोण नहीं अपना सके जितना लोग उनसे चाहते थे। लेकिन समझौते पर हस्ताक्षर हो जाने के बाद—और जैसाकि मेरे साथियों ने कहा है, हस्ताक्षर करना भी काफी साहस का काम था क्योंकि बहुत से लोग इसके विरोध में थे—वह यह सुनिश्चित करने में अटल रहे कि उस समझौते की भावना का प्रचार और प्रसार पूरे पंजाब, बल्कि पूरे देश में हो और इसे निष्ठापूर्वक क्रियान्वित किया जाए। लेकिन मैं यह नहीं भूल सकता कि कुछ दिन पहले मुझे आशा है मेरे मित्र नाराज नहीं होंगे लेकिन यह एक तथ्य है जिसका स्मरण कराया जाना चाहिए। स्वयं संत लोंगोवाल ने एक सार्वजनिक वक्तव्य देकर जल्दी चुनाव कराने के बारे में भी आशंकाएं व्यक्त की थीं। उन्होंने ही कहा था कि चुनावों के लिए शायद अभी वातावरण नहीं बना है, जो भी हो, उन्होंने इसकी कीमत अदा कर दी है, हमने अभी नहीं की है और हम अभी जीवित हैं। उन्होंने अपना जीवन देकर इसकी कीमत चुकाई है। मैं नहीं समझता कि कोई व्यक्ति इससे बड़ी कीमत चुका सकता है। जो कुछ भी उन्होंने एकता, शांति तथा साम्प्रदायिक भाईचारे को सुदृढ़ करने के लिए किया और विशेषकर अपने जीवन के अंतिम दिनों में किया उसके लिए वे सदा याद किये जाते रहेंगे तथा वही उनका सबसे बड़ा स्मारक होगा। हम सभी को मिलकर यह शपथ लेनी चाहिए कि पंजाब में फिर से स्थायी शांति सौहार्द और साम्प्रदायिक एकता लाने के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता दिलाने में हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

इन शब्दों के साथ मैं अपनी पार्टी की ओर से संत लोंगोवाल को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री के० पी० उन्नीकृष्णन (बडागरा): अध्यक्ष महोदय, मैं और मेरा ग्रुप सदन के माननीय नेता और विरोधी दलों के माननीय नेताओं द्वारा व्यक्त उद्‌गारों से सहमत हैं।

संत लोंगोवाल, जिनकी स्मृति में हम अपनी विनम्र श्रद्धांजलि प्रस्तुत कर रहे हैं, कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे। पिछले कई वर्षों से मैं उन्हें जानता था और उनके असाधारण व्यक्तित्व की अमिट छाप मेरे हृदय पर पड़ी है। हालांकि उनकी औपचारिक शिक्षा अधिक नहीं थी, लेकिन वे इस महान देश के उन संत-दार्शनिकों की परम्परा में थे जिनमें बुद्धिमता

कूट-कूट कर भरी थी और जिनमें प्रतिकूल स्थितियों का सामना करने का अपार नैतिक साहस था। मैं यह मानता हूं मुझे उनकी संगति से काफी लाभ हुआ है। वह कोई साधारण संत नहीं थे जो मात्र सम्मान के लिए संत कहलाते हों। वह एक ऐसे संत थे जिन्होंने संत का जीवन जिया और सिख धर्म के महान संस्थापकों की सच्ची परम्पराओं के अनुसार कार्य किया। यदि उन्होंने महसूस किया कि वे लोग अलग-थलग पड़ गए हैं तो वह उसका मुकाबला करने के लिए तैयार थे और बिना वैर-भाव के उनके लिए लड़ने के लिए तैयार थे। उनका किसी के प्रति वैर-भाव न रखना उन्हें वास्तविक संतों की श्रेणी में लाता था। यदि उनके कुछ सहयोगियों ने उनका समर्थन किया होता तो शायद इस देश का इतिहास दो-तीन वर्ष पहले ही बदल गया होता।

वह पृथकतावादी हिंसा के शिकार हो गये और निःसन्देह ऐसी पृथकतावादी हिंसा और आतंकवाद को, जो कि इस देश में पिछले कई वर्षों से चल रहा है, बरदाश्त नहीं किया जा सकता। हमें अपने दृढ़ संकल्प द्वारा उसका उन्मूलन करना चाहिए। परन्तु मैं कह सकता हूं कि राज्य सरकार के सुरक्षा सम्बन्धी महत्वपूर्ण साधन जिनका निसंदेह अत्यन्त महत्व है इसके लिए पर्याप्त नहीं हैं। जब तक हम राजनीतिक दृढ़ता एवं नैतिक उत्साह से कार्य करने के लिए तैयार नहीं होते तब तक हम इस हिंसा को समाप्त नहीं कर सकते। मेरा दृढ़ विश्वास है कि सन्त लोंगोवाल ने वह नेतृत्व दिया जो कि हिन्दू सिख एकता और राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक है। हिंसा व्यक्तियों के मनों में रहती है चाहे वह पागलपन की हो अथवा गुमराह किए जाने के कारण हो और जब तक हम महात्मा गांधी के दृष्टिकोण तथा उस महान परम्परा जिससे सन्त लोंगोवाल का सम्बन्ध था, को नहीं अपनाते, हम राष्ट्रीय एकता का अपना लक्ष्य नहीं प्राप्त कर सकते।

महोदय, भारत के इस महान सन्त के प्रति मैं अपना सम्मान व्यक्त करना चाहता हूं, जिसने अपने जीवन के अन्तिम श्वांस तक उन कुछ मूल्यों पर जो इस देश में प्रिय माने जाते हैं बल दिया तथा राष्ट्रीय एकता के लिए निष्ठापूर्वक कार्य किया।

[हिन्दी]

बेगम अकबुल्ला (अनन्तनाग) : जनाब स्पीकर साहब, मुझे इन्तहाई दुःख है कि सन्त लोंगोवाल जी दहशतपसंदी के हाथों कत्ल किए गये। संत जी की मौत पंजाब के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे मुल्क के लिए नुकसान है।

मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी जम्मू व कश्मीर नेशनल कान्फ्रेंस की तरफ से इस कत्ल की पुरजोर मजम्मत करती हूं। हम मुल्क और कौम के दुःख में बराबर के शरीक हैं। संत जी ने वजीरेआजम के साथ मफामत करके पंजाब में अमन की फिजा कायम की थी जिसको कायम रखना होगा।

हमको दहशतपसंदों के सामने झुकना नहीं चाहिए बल्कि मुल्क की सलामियत और एकता के लिए पूरी कुव्वत के साथ लड़ते रहना चाहिए।

श्री मोहम्मद महफूज अली खां (एटा) : जनाब स्पीकर साहब, मैं एक शेर पढ़ना चाहता हूं—

जिनकी नौबत की सदा से गूंजता था आसमां
दम बखुद हैं मकबरों में हूं हां कुछ भी नहीं।

आज यह खबर सुनकर बड़ा अफसोस हुआ। मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी लोक दल की तरफ से यह कहना चाहता हूं कि सन्त जी का जो मुकाम था, बहुत बड़ा मुकाम था। मैं समझता हूं कि महात्मा गांधी के बाद अगर कुर्बानी दी है पीस लाने के लिए और मामलात को तय कराने के सिलसिले में जो कि पंजाब में हुए, उनमें उनका बहुत बड़ा हाथ था। हाथ ही नहीं था बल्कि उन्होंने अपनी जान भी दी। अमन का एक मुजाहिद हमारे दरम्यान से चला गया।

मैं ज्यादा न कहते हुए, अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से यह अर्ज करूंगा कि खुदा उनकी रूह को एक अच्छी जगह दे।

[अनुवाद]

श्री इब्राहीम सुलेमान सेठ (मंजेरी) : संत लोंगोवाल के निधन पर मैं गहरा शोक और रोष व्यक्त करता हूं। उनकी गोली मार कर हत्या कर दी गई। यह एक बड़ी दुखद घटना है जिसने राष्ट्र को हिला दिया है। संत लोंगोवाल की हत्या क्यों की गई ? उनका अपराध क्या था ? कुछ पथ भ्रष्ट लोग समझते हैं कि उनका अपराध यह था कि वह देश से प्यार करते थे, शान्ति चाहते थे और हिन्दुओं तथा सिखों के बीच सद्भावना चाहते थे, उनका अपराध यह था कि उन्होंने समझौते पर हस्ताक्षर किये थे।

इसके लिए उन्हें नुकसान उठाना पड़ा तथा अपने सिद्धान्तों पर अटल रहकर और उनके लिए अपने प्राण गंवाकर वास्तव में वह शहीद हो गये और भारत के एक महान सपूत बन गये हैं। इस भारी क्षति पर पूरा देश शोक व्यक्त करता है।

मुझे उर्दू की यह पंक्तियां याद आ रही हैं :

[हिन्दी]

"मत सहल इसे समझ फिरता है फलक बरसों,
तब खाक के परदे से इन्सान निकलता है।"

(अनुवाद)

वह इंसान थे, मानव थे जो अब हमारे बीच नहीं रहे। हम उनके निधन पर शोक व्यक्त करते हैं और न केवल पूरे राष्ट्र को, न केवल सिख समुदाय के प्रति अपितु उनके परिवार के प्रति भी अपनी भावनाएं व्यक्त करता हूं। मुझे अत्यन्त खेद है कि आतंकवाद अभी भी हमारे देश में बना हुआ है। इस आतंकवाद का हमें मिलकर सामना करना पड़ेगा और देश को हिंसा तथा विनाश से बचाना होगा।

श्री अमर राय प्रधान (कूच बिहार) : अध्यक्ष महोदय, हमें यह समाचार सुनकर अत्यन्त दुःख हुआ है कि शान्तिप्रिय संत लोंगोवाल जिन्होंने समझौते पर हस्ताक्षर किये थे, की गोली मारकर हत्या कर दी गई। एक सच्चे देशभक्त के खोने पर सारा राष्ट्र संतप्त हैं।

महोदय, मैं अपनी पार्टी फार्वर्ड ब्लाक की ओर से सभा के नेता तथा अन्य नेताओं का जिन्होंने संत लोंगोवाल के प्रति सम्मान व्यक्त किया है, साथ देना चाहता हूं। हम सबको देश में पूर्ण शान्ति और सद्भावना की उम्मीद करनी चाहिए और उसके लिए एक होकर कार्य करना चाहिए जिसके लिए संत ने अपने जीवन का बलिदान किया।

श्री एन० वी० एन० सोमू (मद्रास उत्तर) : अध्यक्ष महोदय, मैं भी नेताओं द्वारा व्यक्त भावनाओं से सहमत, समर्थन हूं। यह देश का भारी क्षति है। दिवंगत लोंगोवाल जी ने शांति के लिए प्रयास किया और सद्भावना पूर्ण समझौता किया। समझौते के बाद तथा निर्वाचन की घोषणा के बाद यह दुखद घटना हुई। लोंगोवाल जी ने अपना जीवन देश के लिए बलिदान कर दिया।

मैं द्रविड़ मुनेत्र कड़गम पार्टी तथा अपने नेता डा० करुणानिधि की ओर से संतप्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं।

डा० ए० के० पटेल (मेहसाना) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी पार्टी की ओर से तथा अपनी ओर से सन्त लोंगोवाल की हत्या पर गहरा शोक व्यक्त करता हूं। कल शाम को जब हमने उनकी हत्या का समाचार सुना तो वास्तव में हमें गहरा धक्का लगा। कुछ दिन पूर्व जब उन्होंने पंजाब के बारे में समझौते पर हस्ताक्षर किये थे, लोग उम्मीद कर रहे थे कि पंजाब में तथा देश में शांति स्थापित होगी परन्तु दुर्भाग्य से हमने कल यह देखा कि उन्हें समझौते पर हस्ताक्षर करने का मूल्य चुकाना पड़ा। मैं इस प्रकार की हिंसा के कार्य की कड़ी निंदा करता हूं तथा अपनी पार्टी की ओर से शोक व्यक्त करता हूं।

श्रीमती डी० के० भंडारी (सिक्किम) : अध्यक्ष महोदय, देश के लोग माननीय प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी तथा संत लोंगोवाल द्वारा हस्ताक्षरित पंजाब समझौते से अति प्रसन्न थे। आज हमें यह दुखद समाचार सुनकर धक्का लगा कि शांति स्थापित करने वाले व्यक्ति की आतंकवादियों द्वारा हत्या कर दी गई। इस घृणित अपराध की निंदा के लिए कोई भी शब्द पर्याप्त नहीं हैं। मैं सिक्किम संग्राम परिषद की ओर से संत लोंगोवाल के शोक संतप्त परिवार के प्रति तथा अकाली दल के प्रति हार्दिक शोक और संवेदना व्यक्त करती हूं।

इन शब्दों के साथ भारत के इस महान सपूत के प्रति मैं अपनी विनम्र सद्भावना व्यक्त करती हूं।

श्री पीयूष तिरकी (अलीपुरद्वार) : महोदय, मैं दिवंगत नेता भारत के महान सैनिक, संत लोंगोवाल के प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त करता हूं। धर्म और राजनीति ने हमारे देश के बहुत से अमूल्य जीवन लिए हैं। भारत का यह महान सपूत नहीं रहा परन्तु राष्ट्र उन्हें तथा उनके महान बलिदान को सम्मान सहित याद रखेगा। मैं अपनी पार्टी आ० ए० एस० पी० की ओर से तथा अपनी ओर से संवेदना व्यक्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : उर्दू का एक शेर है :

[हिन्दी]

"यूं तो हजारों बरस से है आदमी का वजूद,
मगर आंख आज भी तरसती है आदमी के लिए।"

[अनुवाद]

अत: संत लोंगोवाल को हम इस तरह याद करते हैं और याद करते रहेंगे।

माननीय सदस्यगण एक बार फिर हम करुणा और दुख के क्षणों में मिल रहें हैं। राष्ट्र एक और जघन्य और कायरतापूर्ण हिंसा की घटना पर भयाक्रांत रह गया है। संत हरचन्द सिंह लोंगोवाल हत्यारों की गोली के शिकार हुए हैं। घृणा और साम्प्रदायिक दुर्भावना फैलाने और

लोकतंत्रीय प्रक्रिया तथा राष्ट्र की शान्तिपूर्ण प्रगति में बाधा पहुंचाने और उसे अस्थिर करने के लिए एक योजनाबद्ध और अहितकर अभियान ने हिंसा की घृणित प्रवृत्ति को जन्म दिया है जो भारतीय संस्कृति के लिए पूरी तरह से नई है।

संत हरचन्द सिंह लोंगोवाल की हत्या एक पूजा स्थल पर हुई। एक सभा को संबोधित करके सिर झुकाकर सर्वशक्तिमान परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। इतिहास में शायद यह असहिष्णुता और पागलपन की निकृष्ट घटना मानी जाएगी।

आतंकवादियों की गोलियों ने देश की एक और विवेकपूर्ण आवाज को खामोश कर दिया है। कल शाम हुई संत हरचन्द सिंह लोंगोवाल की निर्मम हत्या की निन्दा करने में कोई भी शब्द पर्याप्त नहीं हो सकते। पंजाब ने एक महान नेता खोया है और देश ने साम्प्रदायिक सौहार्द और शान्ति के लिए काम कर रहे एक वीर योद्धा को खो दिया है। संत लोंगोवाल जी ने अपना जीवन अत्यन्त श्रेष्ठ कार्य में, अर्थात इस महान राष्ट्र की एकता और अखण्डता के हित में, बलिदान कर दिया है।

53 वर्षीय संतजी सरल, गम्भीर और मृदुभाषी सिख नेता थे। उन्होंने सद्भाव, मेलजोल और साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए काम किया और तोड़-फोड़ की कार्यवाहियों की खुलकर निंदा की। वह देश की एकता और अखण्डता के पक्षधर थे।

हत्यारों ने संतजी की आवाज को निःसन्देह खामोश कर दिया है परन्तु इस सभा को पूरा विश्वास है कि इससे पृथकतावादी ताकतों से पूरी ताकत के साथ लड़ने को हमारा संकल्प और अधिक मजबूती पकड़ेगा। हमें पक्की उम्मीद है कि यह बलिदान बेकार नहीं जायेगा तथा प्रधान मंत्री और लोंगोवाल द्वारा हस्ताक्षरित समझौता अविलम्ब और सही मायने में लागू किया जायेगा, क्योंकि दिवंगत नेता के प्रति यही सबसे अच्छी श्रद्धांजलि होगी।

पारस्परिक सद्भाव द्वारा हमें अपने चुने हुए शान्ति और प्रगति के रास्ते पर आगे बढ़ना होगा। हमें भारत की अखण्डता को बनाये रखने के अपने संकल्प के प्रति अपने को पुनः समर्पित करना है और यह सुनिश्चित करना है कि स्वतन्त्रता लोकतन्त्र और धर्म-निरपेक्षता की नीति राष्ट्र विरोधी तत्वों के दबाव, हिंसा एवं आतंक के आगे कभी नहीं झुके हैं। गुंडागर्दी तथा अपराधिक कार्यवाहियां हमारे राष्ट्र को झुका नहीं सकेंगी। स्वाधीनता, लोकतन्त्र, शान्ति और भाईचारे की मान्यताएं कभी समाप्त नहीं होंगी और यह देश हम सबके लिए एक प्यारा घर सदा बना रहेगा जिसमें हम जीवन पर्यन्त रह सकें तथा उसके लिए अपने प्राणों की आहुति दे सकें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह सदन दिवंगत आत्मा के प्रति सम्मान और श्रद्धांजलि व्यक्त करने और शोक संतप्त परिवार के प्रति गहरा दुःख व्यक्त करने में मेरा साथ देगा।

सदस्यगण अब थोड़ी देर के लिए संत लोंगोवाल जी की स्मृति में मौन खड़े होंगे।

11-36 म० प०

तत्पश्चात् सदस्यगण थोड़ी देर के लिए मौन खड़े रहे

अध्यक्ष महोदय : संत लोंगोवाल जी के सम्मान में सभा की कार्यवाही अब स्थगित होती है। सभा कल 11 बजे म०पू० समवेत होगी।

11-38 म०प०

तत्पश्चात् लोक सभा, गुरुवार, 22 अगस्त, 1985/21 श्रावण, 1907 (शक) के ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।

मुद्रक : प्रिन्टवेल प्रिन्टर्स, दिल्ली-92